

(so ed. Calc.) schon dadurch RĀGA-TAR. 4, 24. DAČAK. 92, 17. — यावत्पु वा एतस्मात्प्राणात्पुरस्तादुरस्तावति पश्चाच्छ्रेणी so weit ČAT. Br. 3, 6, 2, 8. यदि वर्षेतावत्पेव क्वात्प्यम् so lange, in der Zeit TS. 2, 4, 10, 1. स यावद्दूर्ध्वः पराविद्यति तावति स्वयमेव व्यरमत 12, 1. Häufig am Anfange eines adj. comp.: तौवन्मान TS. 2, 3, 11, 5. तावद्वर्ष ebenso alt LĀTJ. 9, 12, 2. तावच्छ्रुती M. 1, 69. तावद्गुण 20. तावत्फल ČĀK. 137. — तावत्सूत्रेण mit eben so vielen Schnüren JĀGŃ. 2, 103. तौवद्वीर्यवत् ČAT. Br. 1, 2, 2, 7. In Verb. mit Zahladv. (ob comp.?): त्रिस्तावत्तम् ČAT. Br. 11, 3, 6, 3. द्विस्तावती रज्जुः P. 5, 4, 84, Sch. अथरे दशसाकृन्ना द्विस्तावत्तस्या परे MBh. 4, 289. द्विस्तावच्च करेणवः HARIV. 6927. द्विस्तावत्पुरुषादानां रत्नसाम् MBh. 3, 16176. R. 3, 61, 22. Vgl. द्विस्ताव, त्रिस्ताव. Ueber die Bed. von तावत् und यावत् in der Arithmetik s. COLEBR. Alg. 139. 238. — 2) तौवत् adv. a) so weit, so sehr, so viel, in solcher Menge, — Anzahl: यावच्चतस्रः प्रदिश-शतुर्न्यवत्समभूते । तावत्समैत्विन्द्रियं मयि AV. 3, 22, 5. 4. 12, 1, 33. यावत्पुरुष ऊर्ध्वबाहुस्तावदग्निश्चितः KAUC. 83. RV. 10, 114, 8. प्रस्तरमात्रं शिष्टा तावत्प्रतिपर्येति KĀTJ. ČR. 5, 8, 30, 6, 22. 9, 13, 27. यावदिच्छसि रत्नानि हिरण्यं वा — तावद्दामि ते सर्वम् R. 1, 53, 21. तं समत्तं लोकं द्विस्तावत्पृथिवी पर्येति तां पृथिवीं द्विस्तावत्समुद्रः पर्येति ČAT. Br. 14, 6, 3, 2. — b) so lange, während dessen, in der Zeit; in Correl. mit यावत् wie lange, während, bis: यावैव नुहका भवामो बह्वी वै नस्तावन्नाश भवति ČAT. Br. 1, 8, 1, 3. 6, 3, 11. RV. 10, 88, 19. यावत्तपस्ते जीवियुस्तावन्नान्यं समाचरेत् M. 2, 235. 4, 111. यच्छेषं दशरात्रस्य तावदेवाग्निर्भवेत् 5, 75. — N. 3, 31. MBh. 14, 174. R. 1, 2, 39. 3, 9, 32. PAÑKĀT. 21, 9. ČĀK. 101, 10. BHĀG. P. 6, 16, 7. RĀGA-TAR. 3, 253. fg. MĀRK. P. 13, 39. तावत्कञ्जालमर्दनेः । अन्वयद्विप्रलब्धो ऽभूच्चैरिषाण्डैककर्पटः ॥ यावत्स पश्चिमे यामे वणिक्तत्रागतो ऽभवत् । KATHĀS. 4, 60. 61. in dem Augenblicke als — da: यावच्च निकटं तेषां प्राप तावन्नयो ऽपि ते । — तस्मिन्प्रकृति स्म मुष्टिभिः VID. 81. 104. 114. 295. VER. 5, 11. 13. 6, 19. 28, 7. HIT. 12, 1. 43, 21. तावदेव — पुरा bevor R. 1, 28, 11. Ohne Correl. mittlerweile, inzwischen: ततस्तावदस्तं गते सवितरि HIT. 17, 20, v. l. MBh. 13, 2727. यावत् — द्विस्तावत् zweimal so lange KĀND. UP. 3, 7, 4. तौवत्स्योक्त् so lange ČAT. Br. 11, 3, 1, 2. यावन्न — तावत् so lange nicht, bevor, bis — so lange, während dessen, in der Zeit, bis dahin: अन्नेण हि समस्तावद्यावदेदं न ज्ञापते M. 2, 172. 5, 126. 11, 153. यावन्नो न विमोहयति । तावन्नयि — दुःखं वै स निवत्स्यति N. 14, 16. MBh. 5, 7486. बुद्धिं न कुरुते यावन्नाशे — तावत्प्रसाद्यः R. 1, 63, 15. 3, 1, 28. 49, 14. BHARTJ. 1, 55. 59. PAÑKĀT. 21, 3. 4. PRAB. 7, 3. तावच्च शोभते मूर्खो यावत्किञ्चिन्न भाषते HIT. Pr. 39. यावन्मे दत्ता न नृयति तावद्भवतः पार्श्वं किन्नामि 13, 10. 43, 12. तावद्भवस्य भेतव्यं यावद्भवमनागतम् I, 30. तावत्स्यादग्निर्चिर्विप्रो यावत्तत्स्यादनिर्दशम् M. 3, 79. यावद्भक्तविद्यासा ह्रुपदे — तावदेव MBh. 1, 7414. संवत्सरो ऽत्यगतावद्यावता नागतो गतः BHĀG. P. 9, 3, 23. Mit यावत् kann पुरा verbunden werden: पुरार्थमी वर्तते नेह यावत्तावद्भक्त्याः MBh. 13, 4556. तावदेव चिरं (müssig) यावन्न विमोहये KĀND. UP. 6, 14, 2. Nicht selten fehlt bei यावत् die Negation: बालदायादिकं रिक्थं तावद्वाज्ञानुपालयेत् । यावत्स स्यात्समावृते यावच्चतीतशैशवः ॥ M. 8, 27. तावत्तपः कुर्याद्यावत्तुष्टिकरं भवेत् 11, 233. अहं हि शोषयिष्यामि आत्मानं विजितेन्द्रियः । तावद्यावद्धि मे प्राप्तं ब्राह्मण्यम् R. 1, 64, 19. गच्छसि (v. l. यामि न) यावदत्तम् । तावत् ČĀK. 139. यावदहमाश्रमवासिनः प्रत्यवेक्ष्योपावर्ते तावदार्द्रपृष्ठाः क्रियतां वाजिनः 8,

14. इहैव तावत्तिष्ठामि यावदायात्यसौ VID. 99. 54. — c) sofort; zuvörderst, zunächst: ब्रह्माणि हि चक्षुषे वर्धनानि तावत् इन्द्र मतिभिर्विचि-
 द्मः RV. 6, 23, 6. दातुं च तावदिच्छामि स्वर्गगतस्य मकीपतेः । और्ध्वदेहनि-
 मितार्थमवतीर्यादकं नदीम् R. 2, 83, 24. अर्थमेतौघते तावत्ततो भद्राणि पश्य-
 ति । ततो सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति ॥ M. 4, 174. अहस्तावत्प्रदो-
 षो वा कश्चिद्भक्तिते ते सुखम् HARIV. 10063. धनं तावद्सुखं लब्धं कृच्छ्रे-
 ण पाल्यते HIT. 37, 14. मित्रलाभस्तावद्स्माभिः श्रुतः । इदानीं मुहूर्त्तं श्रो-
 तुमिच्छामः 43, 1. मार्गं तावच्छृणु — संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि MEGH.
 13. तव भन्तणात्स्वामिनः प्राणयात्राणि तावन्न भवति । अथरे दोषश्च समुत्प-
 द्यते PAÑKĀT. 71, 1. एकास्तावत्तुष्टं संप्राप्तो ऽपरं वेलातिक्रमेण 53, 11.
 अर्थकामवार्तानिभज्ञा वयम् — सा त्ववादीत् अर्थस्तावत् — कामस्तु DAČAK.
 in BENF. Chr. 182, 18. fgg. शक्तिद्वयमस्ति । आवरणशक्तिस्तावत् — विक्षेप-
 शक्तिस्तु VEDĀNTAS. (Allah.) No. 36. 39. अहं तावत् — अयं च PRAB. 16, 3. 20, 13.
 तावत् — अयि PAÑKĀT. 128, 2. HIT. 21, 13. तावत् — च PRAB. 13, 6. ता-
 वदेवेदगात् (पतंगमण्डलम्) — उद्यय च u. s. w. kaum — so DAČAK.
 in BENF. Chr. 188, 21. तावत् — व्यतीति ऽस्मिन्काले BHARTJ. 1, 79. संप-
 रिषन्न तामन्मो पश्चात्पुत्र गमिष्यसि R. GORR. 2, 66, 30. तावत् — ततम्
 RAGH. 7, 4. 5. तावत् — पुनः PAÑKĀT. 53, 24. किं तावत् — उत — अहो
 स्वित् ČĀK. 106. — ČĀK. 72. 184. 69, 22. 71, 8. 104, 22. PAÑKĀT. 4, 14. KA-
 THĀS. 3, 6. 23, 217. BHĀG. P. 3, 1, 24. BRAHMA-P. in LĀ. 53, 18. RĀGA-TAR.
 3, 166. PRAB. 13, 6. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 10. Sch. zu KAP. 1, 78. SĀH. D.
 2, 18. P. 4, 2, 93, Sch. Sehr häufig in Verbind. mit einem imperat. als
 Aufforderung zu dem was sofort, zunächst zu thun ist. Hip. 4, 53. R. 1, 4, 8,
 5, 9, 34. 3, 5, 12. 53, 23. 6, 106, 13. ČĀK. 3, 7. 8, 13. 23, 1. 24, 1. 27, 1. 71,
 10. 83, 15. 86, 17. 91, 5. MĀLAV. 12, 3. VIKR. 149. KUMĀRAS. 3, 67. PAÑKĀT.
 17, 20. HIT. 10, 3 (wo तावत् zum Vorhergehenden gehört). 13, 8. 18, 19.
 KATHĀS. 3, 113. VID. 124. BHĀG. P. 7, 4, 26. 8, 6, 19. VER. 28, 8. DAČAK. in
 BENF. Chr. 184, 1. PRAB. 5, 6. RĀGA-TAR. 3, 369. SĀH. D. 73, 18. In Ver-
 bind. mit einem potent. MBh. 4, 388. R. 2, 36, 13, 6. mit अहं müssen: त-
 तावद्वाक्यं त्वं क्षतुमर्हसि R. 2, 52, 36. 1, 24, 11. mit einer 1ten praes.: गि-
 रिराजिमिं तावत्पृच्छामि नृपतिं प्रति ich will zuvörderst den König der
 Berge befragen N. 12, 28. MĀRK. 48, 14. ČĀK. 7, 19. 20. 9, 18. 14, 10. 32,
 15. 46, 7. 68, 6. PAÑKĀT. 21, 8. HIT. 17, 17. 18, 15. VID. 211. mit einer 1ten
 fut. N. (BOPP) 12, 41 (v. l. praes.). ČĀK. 12, 12. 13, 22. 18, 10. 23, 13. 31,
 11. 32, 15 (v. l.). 83, 7. PAÑKĀT. 13, 3. Nicht selten mit zu ergänzendem
 imperat.: इतस्तावत् MĀLAV. 3, 6. 17, 6. PRAB. 3, 3. धनुस्तावत् ČĀK. 93,
 16. VIKR. 76, 14. मा तावत् als Ausdruck der höchsten Missbilligung,
 einer völlig abweichenden Ansicht, etwa so v. a. um des Himmels
 Willen nicht ČĀK. 66, 22. 78, 15. 93, 5. MĀLAV. 3, 12. — d) mit der
 Neg. noch nicht: न तावदृश्यते सूर्यः तयो ऽयं प्रतिभाति च । उदिते —
 भानी कथमेतद्भविष्यति MBh. 1, 1273. 5997. 4, 1249. 6, 1576. R. 1, 63, 22.
 2, 52, 90. 5, 34, 2. MĀRK. 48, 14. ČĀK. 25, 14. VIKR. 7. 64, 18. RĀGA-TAR.
 3, 133. नन्वमुमेव तावदचिरप्रवृत्तम् — ग्रीष्मसमयम् noch nicht lange ČĀK.
 4, 4. RĀGA-TAR. 1, 118. न तावत् — यावत् noch nicht — während KA-
 THĀS. 26, 23. — e) bei Einräumungen wohl, allerdings: सम्यगाहं भवा-
 स्तावद्भूतवध्या विगर्हिता । अवरणं तु वधादन्यः कर्णीयो ऽस्य नियकः
 ॥ R. 5, 49, 2. 2, 38, 7. 11. 52, 43. 58, 25. सूजति तावदशेषगुणाकारं पुरुष-
 रत्नमलंकराणं भुवः । तदपि तत्तणभङ्गि करोति चेदकृत् कष्टमपिपितता